११६

लौटे हुवे मुसाफ़िर

कथावस्तु -

'लौटे हुअे मुसाफ़िर' कमलेश्वरजी का विभाजन की समस्या को लेकर लिखा गया अेक श्रेष्ठ लघु-अुपन्यास है। सौ साल की कहानी को अुन्होंने अिस-लघु-अुपन्यास में खूबी के साथ प्रस्तुत किया है। अिसकी कहानी अेक छोटीसी बस्ती की कहानी है। कमलेश्वरजी ने अिस बस्ती में आअे हुअे परिवर्तनों को ही चित्रित किया है। अिस बस्ती में अेक और छोटीसी बस्ती है - चिकवों की बस्ती। और यही अिस लघु-अुपन्यास की कहानी का मूलाधार है। अिस बस्ती में आज़ादी के पहले, आज़ादी के वक्त और आज़ादी के बाद आअे हुअे परिवर्तनों का लेखाजोखा कमलेश्वरजी ने पेश किया है। १८५७, १९२०, १९४२, १९४५ और फ़िर १९६०-६१, १९४५-४६, १९४७,

१९५० फ़िर १९६१-६२ अिस सिलसिले के मुताबिक बस्ती के परिवर्तनों को चित्रित किया गया है। 'लौटे हुअे मुसाफ़िर' के प्रारंभिक पृष्ठों में १८५७ की बस्ती का निर्देश किया गया है। ..... "यह वही बस्ती है जिसने १८५७ में अंग्रेजों से लोहा लिया था। हर अमीर और महजब के लोगोंने कन्धे से कन्धे मिलाकर गोलियों की बौछार सीनोंपर झेली थी"[1]।

मगर १८५७ के बाद अिस बस्ती ने नया रुख अपनाया। अंग्रेज हिन्दुस्ता आ गये। अिसी बस्ती में छोटे छोटे कार्यालय खुलने लगे। सन १९४२ के आन्दोलन के वक्त हिन्दु-मुसलमान दोनों अलग जातियों के लड़कों ने हंगामा मचाया था। ..... अुन्हें मालूम नहीं था कि देश कैसे आज़ाद होगा ? पर अितना अुन्हें मालूम था कि कुछ करना चाहिअे और वे जो कुछ कर सकते थे, वो अुन्होंने किया था। मगर १९४५ से ही अिस बस्ती के लोगोंके दिलों में अेक आँधी ने जनम लिया और यहीं से ही 'लौटे हुअे मुसाफ़िर' की कथावस्तु का आरम्भ होता है।

..... 'सिर्फ नफ़रत की आग ने अिस बस्ती को जलाया था'। अिस वाक्य के साथ यह लघु-अुपन्यास शुरु हो जाता है। विभाजन के पहले अिस बस्ती में न तो हंगामा था, और न शोर। बडी ही खूबसूरत बस्ती थी यह। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही शान से जी रहे थे। अुनमें कभीभी धर्म के नाम पर खून नहीं बहा, आगजनी नहीं हुअी। ये लोग अपने अपने विश्वासों और रिवाजों के मुताबिक जी रहे थे। दोनों अेक दूसरे के अिद-त्यौहार - अुत्सव में शरीक हो जाया करते थे। अुनमें साम्प्रदायिकता बिलकुल नहीं थी। मज़हब को लेकर अुनमें कभी तनाव पैदा नहीं हुआ और जब तनाव पैदा होने की अुम्मीदे नजर आती, तो ये लोग फ़ौरन समझौता

कर लिया करते थे। राजनीति से तो वे लोग कोसों दूर थे। मगर देखते देखते वह दिन भी आ गया जिस दिन नफ़रत की आग ने अिस बस्ती को जला दिया।

अंग्रेज यहाँ आये। अुनके विरोध में भीतर ही भीरत आग सुलग रही थी। सन १९४२ के आन्दोलन में हिन्दू-मुसलमान दोनों ने सक्रिय हिस्सा लिया। मगर कुछ दिनों बाद मुसलमानों में जिन्ना साहब की चर्चा शुरु हुअी। फिर सन १९४५ का वक्त आया। अेक बूँद खून नहीं गिरा।·····लेकिन भीतर ही भीतर भूचाल आया। दिल्ली अिमारतें टूट गअीं····· अपनेपन का जज्बा मर गया था। नफ़रत की आग ने अिस बस्ती को निगल लिया था··· ·····पता नहीं यह आग कहाँ छिपी थी ?·····नफ़रत की अिस आग की चिनगारियाँ बाहर से आअी थीं- दूसरे शहरों, कस्बों और सूबों से।[१२]····

चिक्कवों की बस्ती 'लौटे हुअे मुसाफ़िर' की कथावस्तु का मूलाधार है। अिस बस्ती में रहनेवाले लोग हैं - नसीबन, सत्तार, साअीं, सलमा, बच्चन आदि। नसीबन बेवा औरत होने के बावजूद भी औरों के प्रति अुसके दिल में ममता है, स्नेह है। वह बच्चन के बच्चों को मां का प्यार देती है। सत्तार की वह हमदर्द है। सत्तार सलमा को चाहता है। सलमा शादीशुदा थी मगर वह भागकर अपने पिता के पास चली आयी थी। अिस बस्ती में आने पर वह सत्तार की ओर खींच जाती है। मगर जब अुसका पति लौट आता है, तब वह फिर अुसके साथ चली जाती है। सत्तार अकेला ही रह जाता है।····

अिस बस्ती के हिन्दू और मुसलमान दोनों अपने अपने ढंग से जी रहे थे। मगर सलमा का पति कमरूद और यासिन जब अिस बस्ती में आ जाते हैं

तब अिस खूबसूरत बस्ती में अेक हंगामा खड़ा कर देते हैं। अिस बस्ती में अेक आँधी आ जाती है। मक्सूद और यासिन दोनों मिलकर नफ़रत की चिनगारी को भड़काते रहते है। यासिन जब देखता है, हिन्दू-मुसलमान यहाँ खुशी के साथ अपनी अपनी ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं, तब वह यह सबकुछ सह नहीं पाता। आखिर आसिन, मक्सूद और साअीं तीनों मिलकर विद्रोह को भड़काने का काम करते हैं। फिर क्या ? अपने अपने मजहब के बारे में लोगों में कानाफुसियाँ होने लगती हैं। मुसलमान हिन्दुओं को नफ़रत की दृष्टि से देखने लगे और हिन्दू मुसलमानों की ओर नफ़रत की दृष्टि से देखने लगे।.... "कानगरेस तो हिन्दुओं की जमात है..... हिन्दू हिन्दू है और मुसलमान मुसलमान है।"[३] हिन्दुओं में भी मुसलमानों के प्रति नफ़रत पैदा हो गयी।..... "औरंगजेबने अत्याचार किये हैं। हिन्दू धर्म को अिस तरह भ्रष्ट किया है, अुसी का बदला तो लेना है। हमारी परम्परा तो राणा प्रताप की, शिवाजी की है, जिन्होंने म्लेच्छों से कभी समझौता नहीं किया।"[४]

पता नहीं क्या हुआ था अिस बस्ती को ? अूँचे अूँचे अिमली - नीम के पेड़ों पर लम्बी लम्बी बल्लियाँ लगाकर लीग और हिन्दू महासभा के झंडे फ़हराये गये थे। घरों पर भी छोटे छोटे के और हरे झंडेण नजर आने लगे थे"।..... "चारों तरफ अैसा सैलाब नजर आ रहा था जिसमें नफ़रत के कीड़े बिलबिला रहे थे....जाने पहचाने लोगों के मुर्दा चेहरे अुतराते हुअे बहते जा रहे थे। वे चेहरे, जिन्हें देखकर अभी तब अिन्सान जीता आया था, जिसमें प्यार और अपमान था। यह सब क्या हुआ है ? लोगों ने चेहरे अुतारकर क्यों फेंक दिये हैं....और सचमुच तब बस्ती में नफ़रत का

अेक भयंकर सैलाब आया था। [115] ······

हिन्दू-मुसलमानों में धीरे धीरे यह नफ़रत की आग बढ़ने लगी। हिन्दू लोगों ने भी जोर पकड़ा था। कल तक जो दोस्त थे, वे आज अेक दूसरे के कट्टर दुश्मन बन गये। दोनों अपने अपने मज़हबों को वरीयता देने लगे। ····· हिन्दू शायद अपने को ज्यादा हिन्दू समझने लगे थे और मुसलमान अपने को ज्यादा मुसलमान····। [116] फिर अचानक अेक दिन अिस बस्ती में मौलाना आये। अुन्होंने मुसलमानों का पक्ष लिया। फिर संघ के अधिकारियों ने भी हिन्दुओं का पक्ष लिया। दोनों अपने अपने धर्मों का समर्थन करने लगे। अिसके फलस्वरूप दोनों जातियों में अुत्तेजना फैल गयी। रोजमर्रा की ज़िन्दगी में तब्दीलियाँ नजर आने लगीं। १६ अगस्त १९४६ को तो अिन दोनों जातियों में तनाव पैदा हो गया। मन ही मन में बँटवारा हो गया। सरहदें बन गयीं। दूरियाँ पैदा हो गयीं।···हिन्दुस्तान और पाकिस्तान····अेक दीवार खड़ी हो गयी। फिर पाकिस्तान बनने का अैलान हुआ। मुसलमान खुश हो गये। जो मुसलमान रअीस थे वे पाकिस्तान की ओर निकल पड़े और जो गरीब थे मगर अमीर बनने के सपने लेकर पाकिस्तान की ओर निकल पड़े, फिर भी पाकिस्तान पहुँच ही नही पाये।····सलमा भी मजबूर होकर मकसूद के साथ पाकिस्तान चली गयी। धीरे धीरे अेक अेक करके सारे मुसलमान पाकिस्तान चले गये। अब अिस बस्ती में सिर्फ नसीबन, सायीं और सत्तार ही रह गये। सलमा के जाने के बाद सत्तार ने भी खुदकशी कर ली। सत्तार भी अिस भयानक मौत के बद अिफ्तिकार भी चला गया। अब रह गयी सिर्फ नसीबन।

......सिर्फ नफरत की आग ने अिस बस्ती को जलाया था। फिर समय का अेक लम्बा अंतराल बीत गया। अिप्तिकार के सिवा यहाँ फिर कोअी नहीं आया।.......फिर सन १९६१-६२ का दौर आया। कुछ मुसाफ़िर अिस बस्ती की ओर लौट पड़े। ये वही मुसाफ़िर थे, जो अमीर बनने के सपने लेकर पाकिस्तान की ओर चल पड़े थे, मगर पाकिस्तान पहुँच नहीं पाअे। अुनके ही लडके आज अिस बस्ती की ओर लौट रहे है। अिन नौजवानों के बचपन के दिन अिसी बस्ती में गुजरे थे।

........नसीबन अुन्हें अुनके टूटे फूटे घरों तक पहुँचाती है।...... "नसीबन खुशी से रो पड़ी....वे सब बच्चे, बशी, बाकर, रमजानी वगैरह जवान होकर लौटे थे। नसीबन अुन्हें अपने साथ ले गयी थी... अुन निशानों के पास जो अब भी बाकी थे....यहीं तेरे अब्बा का घर था, बशीर... यहाँ बैठकर वह चमड़ा कमाया करता था और बाकर बेटे....वह देख रहा है न....अुसी के नीचे जो टूटी हुअी दीवार है, वह तेरा घर था.... और वो घर....वो घर.....और वह ढहा हुआ चबूतरा रमजानी के चाचा का है।....नसीबन दौडकर घर गअी थी और जो भी मिला था अुठा लाअी थी बोरा, फटी, दरी, मैली चादर वगैरह और बोली.... लो अिन्हें यहीं पेड़ के नीचे बिछा लो और आराम करो।"[७] ....

पात्र और चरित्र-चित्रण

'लौटे हुअे मुसाफ़िर' में तमाम सारे पात्र पाअे जाते हैं। हर पात्र अपनी अपनी विशेषताओं को लेकर सामने आ जाता है। फिरभी प्रधान पात्रों के अंतर्गत नसीबन, सत्तार, साअीं और सलमा आ जाते हैं।

नसीबन - यह अेक अैसा नारी पात्र है जो अिस लघु-अुपन्यास में आदि से अन्त तक छाया हुआ रहता है। आज़ादी के बाद अिस बस्ती में आअे हुअे परिवर्त्तनों को देखकर नसीबन खुश होने बजाय मायूस है। अिस मायूसी का अेक मात्र कारण है - अब यहाँ अुसका अपना कोअी नहीं है। सिर्फ नफ़रत की आग ने अिस बस्ती को जलाया था। फ़िर सारे के सारे यहाँ से चले गये और बस्ती अुजड़ गअी। वास्तव में नसीबन ही अेक अैसी औरत है जो नीडर है। अुसने ज़िन्दगी के संघर्षों को झेला है। अुसको हर आदमी की पहरख है। गैर लोगों का अपने निजी मामलों में दखल देना अुसको जरा भी बरदास्त नहीं है। नसीबन है तो बड़ी हमदर्द। दूसरों के प्रति अुसके दिल में प्यार है, ममता है, स्नेह है। सलमा और सत्तार के प्यारे में साअी को रुकावटें डालते हुअे देखकर नसीबन अुसे फ़टकारती है.... "सारी दुनिया की जिम्मेदारी क्यों ओढ ली है तुमने साअी ? जिसके जो मन में आता है, करने दो, तुम टांग क्यों अड़ाते हो.....सलमा और सत्तार दोनों बड़े है, अगर वे आपसी सम्बन्ध रखना चाहते हैं, तो अुन्हें क्यों रोका जाअे और फिर सलमा बड़ी ही बदनसीब औरत है। सत्तार कोअी बुरा आदमी नहीं है।" ..... नसीबन के दिल में सत्तार के प्रति सहज प्रेम भाव है। वह अनपढ़ होकर भी यह भली भाँति जानती है कि अंग्रेजो के पास बड़ी शक्ति है। अकेला सत्तार अुनसे कैसी मुकाबला कर सकता है ? वह अपने पास की अेक लोहे की गुप्ती सत्तार को दे देती है। नसीबन में अेक मां का विशाल हृदय है। अुसको और बच्चन को लेकर तरह तरह की अफवाहें फैलने के बावजूद भी नसीबन विधुर बच्चन के बच्चों की परवरिश किया करती है। अुन बच्चों को मां का प्यार देती है।

दरअसल नसीबन मुसलमान है और बच्चन हिन्दू है, मगर नसीबन के दिल में भूलकर भी मज़हब का स्वाल नहीं अुठता। बच्चन के प्रति अुसके दिल में जो प्यार है, अुसमें अेक गहराअी है। अेक अुदात्तता है। लोगों नसीबन और बच्चन के अिस प्रेम को ग़लत समझ बैठते हैं। अिससे नसीबन तिलमिला अुठती हुअी कहती है.... "अब पचास के आसपास आकर क्या यही सब रह गया है, मेरे लिअे....अिस अुमर में हूँ लोगों को शरम नहीं आती अैसी बातें करते हुअे"।.....बच्चन पर जब चोरी का अिल्जाम लगाया जाता है, तो वह खुद कह देती है - "बच्चन का चोरी में कोअी हाथ नहीं।".... आगे चलकर हिन्दुस्तान को आजादी मिली मगर अुसका बँटवारा हुआ। मुसलमान लोग पाकिस्तान चले गये मगर नसीबन अपनी अिस बस्ती को छोड़कर जाने के लिअे तैयार नही हुअी। अपनी अिस बस्तीसे अुसको बहुत प्यार था। 'लौटे हुअे मुसाफ़िर' में नसीबन का चरित्र अत्यन्त सजीव बन पड़ा है। अुसका चरित्र बडा ही प्रभावशाली है। अुसके चरित्र में कहीं भी कृत्रिमता दृष्टिगोचर नहीं हो पाती। स्वाभाविकता अुसके चरित्र की खासियत है। अुसके चरित्र को जान लेने पर हमारे सामने कुछ मौलिक विशेषताअें आ जाती हैं, जो अुसके चरित्र अूँचा अुठाती है।.....

१. नसीबन का मन अपरिवर्तनशील है।

२. नसीबन में अेक सहज मातृ-हृदय है।

३. नसिबन बड़ी ही हमदर्द है।

४. बच्चे नसीबन की अेक कमजोरी है।

५. नफ़रत से अुसे चिढ़ है।

६. अपनी मिट्टी के प्रति वह वफ़ादार है।

७. वो नसीबन स्वाभिमानी है।

८. अुसमें करुणा, अुदारता, सहजता, स्पष्टता, निर्भयता और धर्मनिरपेक्षता आदि गुण मौजूद है।

सत्तार - सत्तार भी अिस लघु-अुपन्यास का अेक प्रभावपूर्ण पात्र है। यह वही सत्तार है जो पहले किसी सर्कस कम्पनी में घोड़ों की जीन कसा करता था, अब अिस बस्ती में आ गया था। वास्तव में सत्तार किसी दूसरे कस्बे से आया था। शहर में साअीं से अुसकी मुलाक़ात हुअी थी। वहीं से साअीं अुसे अिस बस्ती में ले आया था। रास्ते में ही सत्तार ने कहा था - ''लगता है अब अपना पाकिस्तान बन जाअेगा.....शायद अेक बेहतर ज़िन्दगी मिले मुसलमानों को। यहाँ तो बड़ी गरीबी है, न करने को काम है, न रहने की जगह''[१०]। मगर सत्तार जब अिस बस्ती में आता है, तो पाकिस्तान के बारे में सोचता छोड़ देता है, बल्कि आगे चलकर अिस नये पाकिस्तान का विरोध भी करता है। अिस बस्ती में आने पर नसीबन से अुसकी पहचान हो जाती है और सलमा से भी, मगर सलमा के बारे में यह पहचान प्यार में बदल जाती है। अिनके अिस प्यार को लेकर लोगों में कानाफूसियाँ शुरू हो जाती हैं, अिस बात को लेकर कि शहर से आया अेक युवक बस्ती की अेक शादीशुदा औरत से प्यार करने लगा है।

फिर कुछ दिनों बाद सलमा का पति मक़सूद लौट आता है। अिससे सत्तार की खुशी अुदासी में बदल जाती है। और यह अुदासी अुसकी मौत तक बनी रहती है। वास्तव में सलमा मक़सूद के यहाँ से भाग आयी थी। अिस बस्ती में आने पर सत्तार और सलमा में प्यार बढ़ने लगता है। मगर विभाजन के दिनों मक़सूद फिर आता है। पाकिस्तान बनने पर सलमा अपने पति के

MAH. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

चली जाती है। सत्तार अकेला रह जाता है। पाकिस्तान जाने से पहले सलमा अेक बार फिर सत्तार से मिलना चाहती है मगर सत्तार मिलना पसन्द नही करता····· "अब" मिलकर क्या करूँगा·····ुसुससे कहना जब जर जाुूँ तो मेरी कब्र पर मिलने चली आये, वही मुलाकात होगी"।११ मक्सूद और यासीन साम्प्रदायिकता की आग भड़काने की कोशिश करते रहते हैं, मगर सत्तार को ये बातें पसन्द नहीं आती। मक्सूद और यासीन के प्रति सत्तार के दिल में कोअी प्रेम नहीं, बल्कि घृणा है। और अेक दिन मारकाट की ुसी झोंक में ुसने मक्सूद की नाक तोड़ दी थी।····

मगर जब पाकिस्तान बना तो अेक अेक करके सभी लोग पाकिस्तान चले गये। सलमा भी मक्सूद के साथ पाकिस्तान चली गयी और जब यह समाचार सत्तार को मालूम पड़ा तो अेक दिन ुसने मस्जिद के अहाते में खुदकशी कर ली। अिस तरह सत्तार अिस बस्ती में आ गया और यहीं खत्म भी हुआ।

········"सत्तार ुन आम भारतियों का प्रतिनिधित्व करता है, जिनके पास घटनाओं का अर्थ लगाने की शक्ति नहीं होती, जो बड़ेही भावुक और सरल मन के होते है।"१२

साअीं - साअीं खुद को बस्ती के मुसलमानों का प्रमुख मानता है। साअीं अेक अैसा पात्र है जो हमेशा दूसरों की राहों में रुकावटें डालता है। मक्सूद और यासीन के सहारे अिस बस्ती में 'साम्प्रदायिकता' को आग भड़काने की कोशिश करता है। हिन्दुस्तान के बँटवारे के खिलाफ़ जो लोग थे, ुनसे साअीं को नफ़रत है। साअी के व्यक्तित्व को सिर्फ़ अेक ही आदमी जानता है। वह

है - अिफ्तकार। अिफ्तकार बार बार साअीं को डाँटता है। वह अेक जगह पर साअीं के बारे में कहता भी है..... 'यह साअीं बड़ा घुटा आदमी है, सत्तार। शहर भर यह घूम घूमकर करता क्या है ? जितने बुरे फैलवाले लोग है, सबसे दोस्ती है अिसकी। अिससे अल्लाह का क्या वासता'[१२]।

पाकिस्तान के सपने देखनेवाला यह साअी खुद तो पाकिस्तान जा नहीं सकता। वास्तव में अिसके दिल में भी अिस बस्ती के प्रति प्यार था, मोह था। हो सकता है साअी अिसी वजह से पाकिस्तान न गया हो। आखिर वह अपनी गलती को भी स्वीकार कर लेता है। मानव मन की कमजोरियाँ अुसमें भी है, अिसलिअे वह यासीन और मकसूद के बहकावे में आ जाता है। सलमा, सत्तार और नसीबन व्दारा कअी बार अपमानित होने पर भी, वह अिन लोगों से बातें करता है। यह साअी हमेशा दूसरों की ज़िन्दगी में दखल देने का आदी है। और यही अुसके चरित्र की सबसे बड़ी कमजोरी है।

<u>कथोपकथन</u> - 'लौटे हुअे मुसाफ़िर' कथोपकथन-प्रधान लघु-अुपन्यास है। कहीं कहीं पर ये बिलकुल छोटे छोटे बन पड़े है, तो कहीं कहीं पर लम्बे चौड़े। ये कथोपकथन वैसे सहज, सरल और स्वाभाविक बन पड़े हैं। कहीं कहीं पर अिन कथोपकथनों की अत्यन्त मार्मिक अभिव्यंजना हुअी है। अिनके ज़रिअे पात्रों की चरित्रगत विशेषताअें अुभरकर सामने आ जाती हैं। संक्षिप्त कथोपकथन की अेक मिसाल देखिअेगा। अपनी मजबूरी को सलमा सत्तार के सामने पेश करती हुअी कहती है......

- मैं कहीं नहीं जा सकती।
- तुम्हारी यही बात तो मैं समझ नहीं पाता।

- तुम नहीं समझ पाओगे सत्तार....आदमी हो न.....।
- तो तुम मुझे बताओ न।
- मेरे पेट में बच्चा है।
- तुम झूठ बोलती हो।
- मैं सच कह रही हूँ सत्तार।

सत्तार और सलमा का प्रेम उनके बिस निम्नांकित कथोपकथनसे स्पष्ट हो जाता है.....

- अस्पताल जा रही हो ?
- हूँ, सलमा मुस्करा दी थी। क्यों ?
- कुछ नहीं। तुमने मुझे बुलाया था ?
- नहीं तो ।
- तो मैं जाऊँ ?
- जाओ ।
- बिस तरह मैं नहीं जाऊँगा ।
- अगर पाकिस्तान बनातो तुम....जाओगी ?

निम्नांकित कथोपकथन से नसीबन की सत्तार के प्रति हमदर्दी प्रकट हो जाती है.....

- क्यों, क्या बात हो गओ थी ?....उसने पास आकर कहा था।
- खामखाह बात बढ़ गओ....लगता है साले मक्सूद ने पहले से सब तय कर रखा था।
- बहुत चोट आओ है ?
- हाँ, थोड़ी-सी लगी है। पर मरम्मत मैंने उन सालों की भी कर दी।

- खैर होगा, अब जाओगे कहाँ ?
- यही तो समझ में नही आ रहा है।
- मेरे घर चलो और अिन झगड़े टंटों में पड़ना बंद करो समझे। मेरे घर रहो और काम-धाम का कोअी सिलसिला ढूँढो।
- हाँ, अब तो साअी वगैरह मुझे यहाँ काम भी मिलने नही देंगे।
- तेरी किस्मत कोअी तुझसे नहीं छीन लेगा....समझा।

वातावरण - वैसे 'लौटे हुअे मुसाफिर' अैतिहासिक वातावरण प्रधान लघु-अुपन्यास है। अिसमें आज़ादी के पहले, आज़ादी के वक्त और आज़ादी के बाद अेक बस्ती में आअे हुअे परिवर्तनों का चित्रण किया गया है। अब बरसात में भीगी बस्ती का अेक चित्र देखिअेगा -

"..... बरसात के दिन थे। आसमान रहरहकर काला पड़ जाता था। और बादल टूटकर बरस पड़ते थे। पूरी बस्ती में सोंधी महक भरी हुअी थी, पतली गलियों में पानी जमा हुआ था। घरों के दरवाजे पर पड़े टाट के परदे जराबख्तर की तरह भारी होकर झूल आअे थे। बेहद अुमस और सीलन थी।"[१४]

कमलेश्वर जी ने चिकवो की अुजड़ी हुअी बस्ती का चित्रण भी यथार्थ रूप में किया है.... "अब की सब कुछ वैसा ही है....अब भी दूर पर घान मिलों की पतली चिमनियों में से रेंगता हुआ धुआँ आसमान के नीलेपन में वैसे ही खो जाता है.....सुलगते हुअे हुअे पजावे हैं और पकी हुअी अींटो की कतारें....अुनके पीछे गाँव और हरे भरे मैदान, छतनार पेड़। अुधर दलदल की ओरसे सारसों की तेज आवाज अब भी आती है....जलपक्षियों के झुंड अब भी अुसी तरह अिस अुजाड़ बस्ती के अूपर से होकर गुजरते हैं और फिर अुनके

झुण्ड दलदल और मैदानों पर झुकते नजर आते हैं''[१५]।

आज़ादी के पहले यह बस्ती बहुत ही खूबसूरत थी। अिसका वर्णन करते हुअे कमलेश्वरजी लिखते हैं..... ''तब बहुत खूबसूरत थी यह बस्ती। राजा के तालाब में कमल फूलते थे। धीमरों के लड़के कच्चे कमलगट्टे बेचने आया करते थे। दूसरे तालाबों में बैजनी जल मंजरी फूलती थी....अुसके पत्ते नागों की तरह फ़न अुठाअे रहते थे। पंजाबों से ढलानों पर बेरियों के बाग थे। जंगल में कमरख और आंवले के पेड़ थे। पके हुअे बेल जब महकते थे, तो बस्ती में गंध मँडराती थी। महुआ टपकता था, तो खुमार छा जाता था। घरों में ममके चलते और कच्ची शराब खिंचती थी।....नदी-तालाबों में सिंघ, पढीन, डिंगार, सौर और रोहू मछलियों की भरमार था। नदी के पार ताड़ के बाग थे, जहाँ नीरा बिकता था।''[१६]

भाषा-शैली - 'लौटे हुअे मुसाफिर' की सबसे बड़ी खासियत है अुसकी ~~~~~~~~~ भाषा और शैली। अिसके वाक्य बिलकुल छोटे छोटे हैं, पर अत्यन्त मार्मिक। भाषा सरल, सीधी और सम्प्रेषण शक्ति से परिपूर्ण है। भाषा की चित्रात्मकता भी दर्शनीय है। भाषा पात्रों के भावों के अनुकूल बन पड़ी है। भाषा की चित्रात्मकता की अेक मिसाल देखिअेगा.....

..... ''न चाहते हुअे भी अिप्तिकार की कोठरी के पास अुसके कदम ठिठक गअे। अिप्तिकार की कोठरी से मोमबत्ती की रोशनी आ रही थी। अिसका तोप की तरह टिका हुआ था और घोड़ा गर्दन में लटकी बाल्टी से रातब की जुगाली कर रहा था। भिड़े हुअे दरवाजे से अुसने झाँका। अिप्तिकार कांच के चटके हुअे गिलास से गटगट पानी पी रहा था। अुसके सामने वह तामचीनी की प्लेट भी नहीं थी, जिसमें रोटी रखकर वह कच्चे

प्याज और नमक से खाया करता था''[१७]।

'लौटे हुये मुसाफिर' में उर्दू और अंग्रेजी शब्दों की भरमार पायी जाती है। जिन दोनों के मिलाप से भाषा प्रभावपूर्ण बन पड़ी है।

अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग - रेडियो, ब्राडकास्ट, स्कीम, प्रायमरी, स्कूल, ड्यूटी, डाक्टर, लीडर, कलक्टर आदि।

उर्दू शब्दों के प्रयोग - नफ़रत, मरम्मत, खामोशी, गिरफ्तारी, खौफ़नाक, गद्दार, सुराग, कत्लेआम, हिमायती, हंगामा, मुमकिन, आज़ाद, बारिश, सिपहसालार, बागी, काफ़िर, बदतर, ज़िन्दगी, अस्तीफ़ा, दास्तान

पात्रों के नाम भी उर्दू - यासिन, सत्तार, सलमा, नसीबन, अधिकार, साअीं, रज्जन, मक्सूद आदि।

गालियों के प्रयोग -

- अरे हरामखोर लडा मत कर।[१८]
- अुस साले मक्सूद ने पहले से सब तय कर रखा था।[१९]
- मारो साले को।[२०]
- चुप बे हरामी के पिल्ले।[२१]
- अबे हमीं से हरामजादी।[२२]
- वह साला सुहरावर्दी।[२३]
- पकड लो बदमाश को।[२४]

अुद्देश्य - 'लौटे हुअे मुसाफिर' कमलेश्वर जी का समस्याप्रधान लघु-अुपन्यास है। मूलतः यह लघु-अुपन्यास हिंदुस्तान के बँटवारे को लेकर लिखा गया है। आज़ादी के पहले, आज़ादी के वक्त और आज़ादी के बाद अेक बस्ती में आअे हुअे परिवर्तनों का चित्रण करना अिस लघु-अुपन्यास का अुद्देश्य रहा है। वास्तव में विभाजन की समस्या अेक दूसरे के दिल में नफ़रत पैदा करती है। मानवीय संबंधों को केन्द्र में रखकर यह समस्या प्रस्तुत की गयी है। साथ ही साथ कमलेश्वरजी ने अिसमें यह भी दिखाने की कोशिश की है कि सामान्य लोगों का शोषण किस प्रकार होता रहा है।

बँटवारे की समस्या को चित्रित करते हुअे कमलेश्वरजी आर्थिक समस्या को भी सामने रखते हैं। बँटवारे की वजह से किसको फायदा हुआ ? और किसको क्षति पहुँची ? आदि सवाल भी वे अुठाते हैं। साम्प्रदायिकता की समस्या का भी लेखक ने बखूबी के साथ चित्रांकन किया है। यासीन जो बस्ती के लोगों में साम्प्रदायिकता को आग भड़काने की कोशिश करता है। बँटवारे के दिनों जो मुसलमान रअीस थे, वे पाकिस्तान चले गये बहुतसे अरमानों को लेकर। कुछ गरीब मुसलमान भी पाकिस्तान की ओर निकल पड़े, मगर पाकिस्तान तक पहुँच ही नहीं पाअे। रअीस मुसलमानों ने गरीब मुसलमानों की ओर कोअी ध्यान नहीं दिया। जो गरीब थे, अुन्हें बहुत सी परेशानियाँ अुठानी पड़ीं।

"..... मअी जो कुछ धेला - कौडी पास थी, वह तो जाने में खर्च कर दी थी....वह भी पूरी नहीं पड़ी नहीं तो पाकिस्तान नहीं पहुँच जाते। अब रोटियों के लाले पड़ गये हैं।"[२५]

हिन्दु - मुसलमान - इन दो जातियों के बीच तनाव की समस्या इस लघु-उपन्यास की बुनियाद है। इसी तनाव के कारण तो हिन्दुस्तान का बँटवारा हुआ। मज़हब के जरिये नफ़रत की चिंगारियाँ हर एक दिल में भड़क उठी थी। जिन्ना ने भी मज़हब की दुहाई देकर लोगों में नफ़रत की चिंगारियाँ भड़का दी थीं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा हिन्दु-महासभा ने भी इस नफ़रत की आग को भड़का दिया था।

-

टिप्पणियाँ

१. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - १

२. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ४

३. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - २७

४. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ३६

५. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ३८

६. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ -

७. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ११६

८. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ -

९. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ७४

१०. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ९

११. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - २५

१२. सं. डा. चन्द्रभानु सोनवने - हिन्दी अुपन्यास विविध आयाम
पृष्ठ - १६१

१३. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ५८

१४. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ७०

१५. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ११२

१६. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - १

१७. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ६७

१८. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ५०

१९. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ४४

२०. कमलेश्वर - लौटे हुअेमुसाफ़िर
पृष्ठ - ४८

२१. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ६२

२२. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ६२

२३. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ९५

२४. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ - ६१

२५. कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफ़िर
पृष्ठ -